प्र० 'सरोज-स्मृति' कविता की सारांश प्रस्तुत कीजिए।
(उत्तर)

प्र० निराला कृत 'सरोज-स्मृति' कविता का भावार्थ प्रस्तुत कीजिए।

---

* 'सरोज-स्मृति' हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ शोक-गीत है जो कवि की युवा-कन्या सरोज की मृत्यु पर लिखा गया है। कवि के हृदय की सारी संवेदना करुणा के रूप में प्रवाहित हो गई है। इस कविता में कवि ने अपने जीवन के कटु सत्यों तथा व्यावहारिक चिन्तनों को रूपायित किया है। अपनी युवा-कन्या का सौन्दर्य चित्रण जिस तटस्थता एवं ईमानदारी के साथ 'निराला' जी ने किया है, वैसा दूसरा कवि नहीं कर सकता। 'सरोज-स्मृति' में वात्सल्य का स्वरूप इतना उदात्त एवं महान् है कि पाठकों का हृदय करुणा से विह्वल हो जाता है। सरोज को चीनांशुक न पहना पाने तथा उसका समुचित उपचार न कर पाने की आत्म-पीड़ा 'निराला' के हृदय को मथने लगती है। उन्होंने अपनी सही अनुभूतियों को यथार्थ अभिव्यक्ति दी है।

'सरोज-स्मृति' में 'निराला' की रचनाशीलता कई स्तरों पर सक्रिय है। इसमें जो विराटता, आवेग, ममता, विचारोत्तेजन की क्षमता, अलंकार योजना एवं गरिमामय रचना-विधान है, वह हिन्दी की कविताओं में विरल ही नहीं, अनुपम भी है।

डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी ने लिखा है कि 'सरोज-स्मृति' कई अर्थों में 'राम की शक्ति पूजा' की पूरक कृति है। राम की शक्ति पूजा का संघर्ष व्यापक धरातल पर है तो 'सरोज-स्मृति' का संघर्ष वैयक्तिक स्तर पर है। वह कवि की पुत्री सरोज की मृत्यु पर लिखा गया हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ शोक-गीत है। कविता में कवि की विविध रूप मनःस्थितियों का विभिन्न संदर्भों में प्रभावशाली मार्मिक चित्र है। इसमें शृंगार नीति और वैराग्य-भाव के बीच करुणा की अन्तरवर्ती धारा प्रवाहित होती रहती है। इसमें युद्ध और संघर्ष के भी लघु-लघु चित्र हैं। कवि जीवन के साहित्यिक, सामाजिक और वैयक्तिक चित्रों की सांकेतिक अभिव्यक्ति कविता में है।

करुणा और दैन्य के बीच युद्ध और हास्यमूलक प्रसंगों की योजना से कविता में मार्मिक तनाव की योजना है। बिम्ब धर्मिता और ध्वन्यात्मकता व्यंग्य और हास्य कविता की रचना-प्रक्रिया की जटिलता की सूचना देने के साथ-साथ मनःस्थितियों के उर्वर वैविध्य की सूचना देते हैं। वाक्य-भंग के द्वारा कवि व्यंजना के जिस स्तर को प्राप्त करता है वह अद्वितीय है। पुत्री के सौन्दर्य-चित्रण और रति-प्रसंगों के चित्राङ्कन के बीच से जिस वैराग्य भाव और निस्संगता के साथ कला की सूक्ष्मता का निर्वाह किया गया है, वह हिन्दी साहित्य में अद्वितीय है।

करुणा और अवसाद के बीच भी कवि का आत्म तेज और आत्मविश्वास कभी भी प्रतिहत नहीं होता। 'ऐसे शिव से गिरिजा विवाह' कहकर कवि सामाजिक अन्तर्विरोध को भी आड़े हाथ लेता है। सामाजिक रीतियों को तोड़ना क्रान्तिकारी 'निराला' के व्यक्तित्व का अभिन्न अंग है। पुत्री के सौन्दर्य में अपने जीवन के 'बसन्त' का साक्षात्कार और उसका फिर निराकार में पर्यावसान 'निराला' जैसे विदेह कवि के लिये ही संभव था। यही उनकी कला का उत्कर्ष है। कविता का अन्त वैराग्य भाव के साथ होता है। कविता में कहीं भी कौशल, आडम्बर और अलंकारिकता नहीं है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि 'सरोज स्मृति' अनेक दृष्टियों के निराला की अद्वितीय रचना है।

ON POCO F1

परिवर्तन (सारांश)

'परिवर्तन' पंत जी की प्रसिद्ध कविताओं में विशिष्ट स्थान रखती है। इतनी ओजपूर्ण और सशक्त कविता 'पंत' जी ने दूसरी नहीं लिखी। इसमें अनेक भावों की सुन्दर योजना देखने को मिलती है। विश्व रंगमंच पर दृश्यों का परिवर्तन बड़ी द्रुत गति से होता है। कोमलतम वस्तुएँ कठोरता में परिवर्तित हो जाती है, शृंगार वीभत्स का रूप धारण कर लेता है, बड़े से बड़े राजा रंक बन जाते हैं, ऊँचे से ऊँचे राज-प्रासाद खंडहरों में परिवर्तित हो जाते हैं, सुसज्जित नगर और उपवन निर्जन और उजाड़ बन जाते हैं—यह है परिवर्तन का नेत्र निमीलन जो सृजन, सिंचन और संहार की भूमिका का निर्वाह करता है। अनेक आलोचकों ने इसकी मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। इसका कारण यह है कि कल्पना के पंख लगाकर भावनालोक में विचरण करने वाला कवि पहली बार बड़ी सहृदयता के साथ धरती की कठोर वास्तविकता का अनुभव करता हुआ उसी में निमग्न हो जाता है।

परिवर्तन जीवन का शाश्वत सत्य है। परिवर्तन रूपी धुरी पर सुख एवं दुःख के पहिये चक्कर लगाते रहते हैं।

'चक्रवत परिवर्तन्ते दुखानि च सुखानि च'

और भी :

काल क्रमेण जगतः परिवर्त माना
चक्रार पक्तिरिव गच्छति भाग्य पंक्तिः।

संसार परिवर्तनशील है। यदि परिवर्तन न होता तो जीवन में नीरसता आ जाती। अतः अंग्रेजी में भी कहा गया है: Life is not the bed of roses. जीवन गुलाब की कलियाँ नहीं हैं; उसमें काँटे भी हैं। जिगर मुरादाबादी ने ठीक ही कहा है:

गुलशन पसन्द हूँ और गुल भी हैं अजीज,
काँटों से भी निवाह किये जा रहा हूँ मैं।

नौका-विहार (सारांश)

'नौका-विहार' कालाकाँकर के प्रवास-काल में लिखी हुई पंत जी की प्रसिद्ध रचना है। संपूर्ण कविता का मूर्ति-विधान बड़ा ही काव्यात्मक है। बिम्ब-प्रतिबिम्ब भाव के द्वारा प्रकृति के संश्लिष्ट चित्रों की योजना अत्यन्त रमणीय है। इसमें एक ओर जहाँ उपमा एवं रूपकगत अप्रस्तुतों के द्वारा प्राचीन रूढ़ियों का निर्वाह किया गया है, वहीं दूसरी ओर मानवीकरण और विशेषण विपर्यय जैसे आधुनिक अलंकारों का विनियोग भी हुआ है। रहस्यवाद के नाम पर केवल कौतूहल पाया जाता है। किन्तु वेदान्त-दर्शन का कुछ प्रभाव अवश्य पड़ा है जिसे अन्तिम छन्द में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। सब मिलाकर इस कविता में भाषा की विम्ब विधायिनी शक्ति, सुन्दर शब्द-शिल्प, कवि की संवेदनात्मकता, कल्पनाशीलता और सूक्ष्म निरीक्षण-शक्ति का समुचित विकास देखा जा सकता है। गंगा की धारा के समान ही संसार का जीवन शाश्वत है, उसका उद्गम, गति या संगम शाश्वत है। सारी प्रकृति का विलास शाश्वत है। नौका विहार के समय कवि आनन्दविभोर हो जाता है और कुछ समय के लिए वह ब्रह्मानन्द सरोवर में डुबकियाँ लगाने लगता है। दार्शनिकता की पृष्ठभूमि में यह कविता लिखी गई है।

बीन भी हूँ मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ! (सारांश)

महादेवी जी के गीतों की भावभूमि प्रायः एक ही है। इसका कारण यह है कि प्रेम, वेदना और करुणा के परिप्रेक्ष्य में ही सारे भावों की अभिव्यक्ति हुई है। 'वसन्त रजनी' शीर्षक गीत में प्रकृति का अलंकृत रूप विद्यमान है। मानवीकरण और प्रतीकों के द्वारा इनका यह प्रकृति-चित्रण अत्यन्त सजीव एवं प्राणवान् हो गया है। 'वसन्त रजनी' को शुक्लभिसारिका के रूप में चित्रित कर कवयित्री प्राकृतिक व्यंजना को भी बराबर सँजोये हुए हैं। ऐसा लगता है कि वसन्त रजनी के प्रत्येक क्रिया-व्यापार के साथ कवियित्री ने अपनी एकात्मता स्थापित कर ली है।

'जीवन विरह का जलजात' शीर्षक कविता में कवियित्री ने जीवन विरह के महत्त्व को स्वीकार किया है। विरह सृजन-शक्ति से संपन्न है इसलिये इसे सृष्टि के मूल में स्वीकार किया गया है। श्री विनोदचन्द्र पाण्डेय आई०ए०एस० ने ठीक ही लिखा है--

अगर अवनि पर प्रेम न होता,
जीवन का आधार न होता।

सन्त कवियों ने भी प्रेम के पहले ही विरह की स्थिति का चित्रण किया है। सूफियों ने भी विरह को प्रेम में अन्तर्भुक्त माना है। वस्तुतः आत्मा परमात्मा से विमुक्त होकर इस संसार में भटकती है। इसलिए हमारा जीवन ही विरह से प्रेरित है। इसे विरह का जलजात कहना कितना सार्थक है। रामनरेश त्रिपाठी ने ठीक ही कहा है—

विरह प्रेम की जागृत गति है
और सुषुप्ति मरण है
मिलन अन्त है मधुर प्रेम का
और विरह जीवन है।

इसी प्रकार 'बीन भी हूँ मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ' में करुणा और विषाद की छाया स्पष्ट है। इस कविता में आत्मा-परमात्मा के सम्बन्धों को व्यक्त करने के लिए विविध उपमानों को आधार बनाया गया है। अपने हृदय की तड़पन और पीड़ा को व्यक्त करने के लिये तृषित चातक, निठुर दीपक, बुलबुल आदि अप्रस्तुतों को जुटाया गया है। इस प्रकार हम देखते हैं कि महादेवी वर्मा की 'बीन भी हूँ मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ' नामक कविता उनकी महत्त्वपूर्ण कविताओं में से एक है।

मन्दिर का दीप (सारांश)

छायावदी कविता में अभिव्यक्त प्रेम तत्त्व के ऊपर अलौकिकता का आवरण पड़ा हुआ दिखाई देता है जिसे अतीन्द्रियता कहा जाता है। इन्होंने ऐसे अवसरों पर प्रतीकों द्वारा अपनी भावनाओं को व्यक्त किया है—

'यह मन्दिर का दीप इसे नीरव जलने दो।'

अब मन्दिर के उपकरणों की ओर संकेत करती है—

रजत शंख-घड़ियाल स्वर्ण वंशी-वीणा स्वर,
गये आरती बेला को शत-शत लय से भर

P.T.O.

चन्दन, सुमन, अक्षत, धूप, अर्घ्य सभी का समावेश कवियित्री दीपक की लौ में करती है।

यह मन्दिर का दीप सायंकाल जलाया गया है अत: जब तक सूर्योदय नहीं होता उस समय तक सारी रात प्रहरी के रूप में अपने को देदीप्यमान करता रहे।

महादेवी जी ने अपने प्रेम का आलम्बन प्राय: यह बताया है जिसका स्वरूप विराट् एवं विशाल है और जो अलौकिक है। उनके ये सपने सुकुमारी की स्मित से उजले हैं और गीत उनकी अलौकिक प्रेम भावना का संस्पर्श करती हुई दिखाई देती है। इनके अतीन्द्रिय प्रेम का चित्रण देखते ही बनता है, जिसमें आलम्बन का कोई संश्लिष्ट बिम्ब स्पष्ट होता है—

कौन तुम मेरे हृदय में?

कौन मेरी कसक में नित मधुरता भरता अलक्षित?

निराशा, वेदना, दु:खवाद एवं करुणा की विवृति की अभिव्यक्ति छायावाद की एक प्रमुख विशेषता है। छायावाद के कवियों ने वेदना एवं दु:ख को जीवन का सर्वस्व एवं उपकारक माना है। महादेवी वर्मा ने भी विविध प्रकार से विषाद-भावना एवं दु:खवाद की अभिव्यक्ति की है, किन्तु एक भिन्न प्रकार से। महादेवी जी को सुख की अपेक्षा दु:ख अधिक प्रिय रहा है। महादेवी जी को प्रतीक रूप में 'दीप' अत्यधिक प्रिय है। अनेक गीतों में इसका प्रयोग किया गया है।

●

POCO F1